रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67 / 2018–20
चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127 / 204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –40 ● अंक –1 ● कानपुर 1 से 15 जनवरी 2018 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

परिणाम चौंकाने वाले आयेंगे

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मान्यता विषयक प्रपोज़ल देने का समय भारत सरकार द्वारा घोषित समय सीमा के अनुसार समाप्त हो चुका है 28 फरवरी, 2017 से प्रारम्भ हुई गर्मी 30 दिसम्बर, 2017 को शान्त हो गयी, अब पूरे देश का इलेक्ट्रो होम्योपैथ एक परीक्षार्थी की भाँति अपने परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा है और प्रतीक्षा करे भी क्यों न ! क्योंकि पिछले 10 महीने में हमारे साथियों ने पूरे देश में ऐसा वातावरण पैदा कर दिया था कि मानो कोई बहुत बड़ी परीक्षा आयोजित की जा रही है जिसमें पूरे देश का इलेक्ट्रो होम्योपैथ परीक्षार्थी की भाँति सम्मिलित हो रहा है। यह वातावरण हमारे साथियों द्वारा क्यों निर्मित किया गया ? इसका उत्तर तो वही देंगे हम तो उन्हें अपने साथी के रूप में सम्बोधित करते हैं, वे हमें क्या मानते हैं, हमें इसका कोई मलाल नहीं है, गुज़रे वक्त में जो गुज़र गया वह कल की बात थी नव वर्ष में नये सवेरे के साथ स्पष्ट एवं साफ मन से हम पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिए मंगलकामना करते हुए यह प्रार्थना करते हैं कि परिणाम अपेक्षा के अनुरूप ही आयें, भारत एक बहुत विशाल देश है और इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कार्य क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है।

हम आज की बात करें तो हमें इस बात का अभिमान है कि भारत वर्ष का कोई ऐसा कोना नहीं है जहां से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आवाज़ सुनायी न देती हो, पूरब हो या पश्चिम उत्तर हो या दक्षिण चारों दिशाओं में इलेक्ट्रो होम्योपैथ फैले हुए हैं और इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के माध्यम से जनता की सेवा करते हुए जन विश्वास भी अर्जित कर रहे हैं, सात साल की चुप्पी के बाद वर्ष 2011 से इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने जिस गति से विकास किया है वह अद्वितीय है, यह बात हम मात्र अपनी पीठ थपथपाने के लिए नहीं लिख रहे हैं अपितु यह वह सत्य है जो लोग या अन्य चिकित्सा पद्धति के साथी धीरे–धीरे स्वीकार कर रहे हैं आज पूरे देश की स्थिति यह है कि वैकल्पिक चिकित्सा के क्षेत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा पद्धति एक मज़बूत विकल्प के रूप में उभर कर सामने आयी है।

हमारे चिकित्सक साथियों ने जिस जागरूकता के साथ अदम्य साहस दिखाते हुए चिकित्सा व्यवसाय के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किये हैं वह अपने आप में बधाई के पात्र हैं कल तक जो चिकित्सकगण मान्यता और गैर मान्यता में भेद करते थे आज वे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दावों को सही मान रहे हैं, दबी जबान से ही सही पर यह स्वीकार करने लगे हैं कि निश्चित रूप से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वर्षों से शोषण हुआ है और उनकी उपेक्षा भी बहुत की गयी है परन्तु अब वह समय आ ही गया है जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी पूरे दावे के साथ मान्यता के मंच पर अपना दावा ठोक रही है। पिछले 4 वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्यक्षेत्र में गुणात्मक परिवर्तन हुआ है चिकित्सा साहित्य व अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने अविश्वसनीय प्रगति की है।

अधिकारिता के प्रति भी हमारा चिकित्सक जागरूक हुआ है इसका परिणाम यह है कि अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी का चिकित्सक बड़े हुए मनोबल के साथ काम कर रहा है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने अपने ऊपर लगने वाले हर आक्षेपों का मुहतोड़ जवाब दिया है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों की आपूर्ति के बारे में अक्सर सवाल उठाये जाते थे कि इसकी औषधियां प्राप्त ही नहीं होती हैं ! कुछ लोग तो मज़ाक में कहते थे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियां दुर्लभ हैं परन्तु पिछले 4 वर्षों में लगभग 2 सैकड़ा औषधि निर्माता इस क्षेत्र में कूदे और औषधियों को इतना सुलभ बना दिया कि महानगर तो महानगर हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों की पहुँच आज गाँवों व देहातों तक हो गयी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधि के विपणन का बाज़ार भी बहुत बढ़ गया है कहीं–कहीं तो यह अन्य चिकित्सा पद्धति की कम्पनियों के बराबर ही व्यवसाय कर रही है। कुछ लोगों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गुणवत्ता के बारे में संदेह व्यक्त किया और इनकी निर्माण विधि पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े किये गये ! जो लोग इस तरह के बेबुनियाद आरोप लगाते हैं उन्हें यह जान लेना चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों का निमार्ण मनगढ़न्त ढंग से नहीं होता अपितु इलेक्ट्रो होम्योपैथी की यह गुणकारी औषधियां जर्मन होम्योपैथी फार्माकोपिया में वर्णित निर्माण विधि के अनुसार ही निर्मित की जाती है। अस्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों की विश्वसनीयता और गुणवत्ता पर वही सन्देह करेंगे जो पूर्ण ज्ञान नहीं रखते हैं सत्य तो यह है कि हमने और हमारे साथियों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए बहुत कार्य किया है परन्तु किसी सरकारी इकाई के न होने के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्यों का मूल्यांकन नहीं हो सका। इसी मूल्यांकन के अभाव में अल्प ज्ञानी लोग तरह तरह की बातें करते हैं। अब यह बात भी भूतकाल की बात होने वाली है क्योंकि भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमन के लिए मन बना लिया है तभी तो 28 फरवरी, 2017 को एक पत्र जारी कर इस बात की पुष्टि कर दी कि आने वाले दिनों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नियमित करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

वर्ष पर्यन्त की यह प्रक्रिया अब समाप्त हो चुकी है आने वाले दिनों में जो कुछ भी प्रपोज़ल भेजे गये हैं उन प्रपोज़लों को भारत सरकार द्वारा गठित कमेटी अध्ययन करेगी और अध्ययन के उपरान्त कोई न कोई परिणाम अवश्य देगी।

पिछले वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया और बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने जिस दूरदृष्टि के साथ कार्य किया है उससे अपेक्षा तो की ही जा सकती है कि परिणाम अपेक्षित ही आयेंगे भारत सरकार द्वारा जारी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के पक्ष में 21 जून, 2011 का पत्र ही प्रभावी रहेगा और भारत सरकार जो कुछ भी निर्णय लेगी इसमें यह पत्र और इस संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका के साथ भागीदारी भी होगी यह मात्र हमारी कल्पना नहीं है वरन् वह सच्चाई है जो आने वाले दिनों में सत्य साबित होगी।

सबका साथ, सबका विकास का उद्देश्य हमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहयोग करेंगी।

नव वर्ष मंगलमय हो इस मंगल कामना के साथ।

> परिणाम अद्भुत होंगे
> मेहनत फलदायी होती है
> दूरदृष्टि – मज़बूत संकल्प
> जो चला धीरे – वही जीता
> अप्रत्याशित नहीं, अपेक्षित परिणाम आयेंगे

4 जनवरी को ही क्यों मनाते हैं अधिकारिता दिवस

4 जनवरी, 2018 को इलेक्ट्रो होम्योपैथ अधिकारिता दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनायेंगे अधिकारिता दिवस का यह कार्यक्रम पहली बार 4 जनवरी,2012 को बड़े उत्साह के साथ बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा कानपुर में मनाया गया था। उसके बाद प्रत्येक वर्ष यह कार्यक्रम लखनऊ में बोर्ड द्वारा आयोजित किया जाता है इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों के साथ–साथ देश के भिन्न–भिन्न भागों के इलेक्ट्रो होम्योपैथ सम्मिलित होते हैं। वर्ष 2015 में यह कार्यक्रम माननीय प्रधानमंत्री जी के संसदीय क्षेत्र बनारस में आयोजित किया गया था। इस वर्ष यह कार्यक्रम पूरे प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों द्वारा अपने–अपने स्तर से अपने अपने जनपदों में आयोजित किया जा रहा है। प्रत्येक कार्यक्रम के आयोजन के पीछे कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है इस कार्यक्रम के माध्यम से चिकित्सकों के मध्य उनकी अधिकारिता की जानकारी पहुँचाई जाती है परन्तु अधिकारिता दिवस 4 जनवरी को ही क्यों मनाते हैं?यह भी जानना आवश्यक है हमारे चिकित्सकों को ज्ञात होगा कि उच्च न्यायालय के आदेश के तहत प्रदेश में संचालित हो रहे समस्त प्रमाण पत्र प्रदाता संस्थाओं को अपना पंजीयन शासन में कराने का आवेदन करना था उस समय मात्र बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने ही शासन को पंजीयन का आवेदन प्रस्तुत किया था, अन्य संस्थाओं ने पंजीयन के मसले को माननीय उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी परिणाम स्वरूप माननीय उच्च न्यायालय द्वारा सभी याचिकाओं को निरस्त कर दिया गया था जिससे प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथों के सामने प्रैक्टिस का संकट आ खड़ा हुआ था। तब बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने अपनी वैधानिकता व अधिकारिता के तथ्य शासन के समक्ष प्रस्तुत किये और 4 जनवरी 2012 को उत्तर प्रदेश चिकित्सा अनुभाग–6 द्वारा एक शासनादेश प्राप्त करने में सफल रहा।

यह शासनादेश प्रदेश के चिकित्सकों को चिकित्सा करने का व शिक्षा प्रदान करने का अधिकार देता है। तभी से 4 जनवरी को यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

नई आशाओं का स्वागत

हर दिन नया होता है और हर रात एक नई रात होती है. इस दिन और रात के संतुलन में जो कुछ भी सामने आता है वह नया होता है यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह किस चीज़ को नया मानता है और किसे नहीं। नई आशाओं का जन्म होना और फिर आशाओं को पूरा करने के लिए जो प्रयास किये जाते हैं वह जीवन में एक नई स्फूर्ति व नई चेतना को जन्म देते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हर व्यक्ति के मन में यह कामना रहती है कि एकरसता में रमे जीवन में कुछ नवीनता आये इसी नवीनता की तलाश में सारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ वर्षों से भटक रहे हैं और स्थिति यह है कि यह भटकाव रूकने का नाम ही नहीं ले रहा है। साल दर साल गुज़रते जा रहे हैं और 365 दिन के बाद एक नया साल आ जाता है फिर हम अगले वर्ष के लिए कुछ नवीनता के लिए जुट जाते हैं। यह कार्यक्रम वर्षों से चलता चला आ रहा है और कब तक चलता रहेगा ! इसपर कोई सटीक टिप्पणी नहीं की जा सकती है वर्षों का जाना और आना यह तो समय का चक्र है यह हम पर निर्भर करता है कि हम इन वर्षों में क्या संकल्प लेते हैं और इन संकल्पों को पूरा करने के लिए क्या प्रयास करते हैं ! सामान्तयः यह देखा जाता है कि जब नव वर्ष प्रारम्भ होता है तब प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प लेता है कि इस वर्ष हम यह कार्य कर डालेंगे पर अधिकांश मामलों में संकल्प संकल्प ही रह जाते हैं उनके फलीभूति होने के लिए जो प्रयास होने चाहिये वह पूरे मनोयोग के साथ किये ही नहीं जाते हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथ भी इसी जगत का प्राणी है इसलिए वह भी अपने आप को इससे विलग नहीं कर पाता। वर्ष 2017 समाप्त हो चुका है और नये वर्ष का स्वागत भी कर चुके हैं साथ साथ यह भावना भी मन में है जो कार्य गत वर्ष पूरे नहीं हुए हैं वह कार्य इस नये वर्ष में अवश्य पूरे करेंगे।

इन्हीं नई आशाओं के साथ हम सब नये वर्ष में प्रवेश करते हैं, आशाओं का जीवित रहना ही जीवन है क्योंकि निराशा कभी भी जीवन नहीं देती है अपितु निराश व्यक्ति शैनेः शैनेः पीछे होता चला जाता है और कभी कभी ऐसी स्थिति जन्म लेती है जो व्यक्ति के लिए काफी कष्टप्रद हो जाती है। ऐसी स्थिति पैदा न हो इसलिए नई आशाओं के साथ हम नये वर्ष का स्वागत करें क्योंकि नवीनता जीवन में नव स्फूर्ति को जन्म देती है आज जो अवधारणायें हैं कल वह पुरानी होंगी और नई अवधारणायें जन्म लेंगी परन्तु नये और पुराने के फेर में अपनी वास्तविक स्थिति से विलग नहीं होना चाहिये।

जहां तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सम्बन्ध है यह दिनों दिन निखरती जा रही है और इसके निखार के पीछे जो महत्वपूर्ण कारक हैं वह है हमारे चिकित्सकों को अधिकार पूर्वक कार्य करना, क्योंकि किसी भी चिकित्सा पद्धति में निखार तभी आता है जब चिकित्सा पद्धति अपनी उपयोगिता सिद्ध करती है गुज़रे दो तीन वर्षों से परिस्थितियां लगातार अच्छी बनती जा रही हैं। हमारे चिकित्सकों को कार्य करने का पूरा अवसर भी प्राप्त है और सबसे अच्छी बात यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े चिकित्सकों में हीन भावना समाप्त हो चुकी है और वह पूरी तरह से जागरूक हैं और इसी जागरूकता के कारण उनके अन्दर अपनी अधिकारिता का भाव जन्म ले चुका है।

यह कटु सत्य है कि जब कार्य पूरे अधिकार के साथ किया जाता है तो उस कार्य की सुग्राहिता बढ़ती है और कार्य करने वाले के मन में नये उत्साह का जन्म भी होता है और उत्साही पुरूष वह कार्य भी कर डालता है जो सामान्य परिस्थिति में वह नहीं कर पाता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए हम सब कार्य कर रहे हैं और हर एक का अपना योगदान है यह अलग बात है कि आज भी लोगों की दृष्टियां पृथक पृथक हैं कहने को तो पूरे देश में जितने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संगठन कार्य कर रहे हैं वह सब एक स्वर से यही कहते हैं कि हमारा उद्देश्य एक है और हमारे लक्ष्य भी एक हैं जब उद्देश्य एक होता है तो उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयास भी एक जैसे ही होने चाहिये। पूरा एक वर्ष बीत गया पर कहीं से भी यह नज़र नहीं आया कि कोई भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकता की राह पर आगे बढ़कर आने को तैयार हो, हर एक की अपनी अपनी अपेक्षायें हैं और इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सब अपने अपने स्तर से प्रयास भी कर रहे हैं।

हम तो बस यही कामना करते हैं कि इस नये वर्ष में जो सपने दिखायें गये हैं वह सारे के सारे सपने पूरे हों और नई आशायें जन्म लें और इन नई आशाओं को पूरा करने के लिये पूरे मनोयोग के साथ प्रयास किये जायें और हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ के जीवन में एक नयी खुशी का प्रवेश हो।

आखिर दिसम्बर पार हो ही गया

वर्ष 2017 इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जीवन का सबसे गहमा गहमी वाला वर्ष रहा है। इस वर्ष इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संगठनों ने जितनी सक्रियता दिखायी है उतनी सक्रियता गुज़रे कई वर्षों में नज़र नहीं आयी इस सक्रियता का कारण क्या था ?यदि इस विषय पर वर्षपर्यन्त किये गये कार्यों पर एक दृष्टि डालें तो हमें तमाम उतार चढ़ाव देखने को मिलते हैं, हमने क्या खोया ! और क्या पा रहे हैं !! यह तो कार्य करने वाले ही बता पायेंगे परन्तु जो कुछ भी आज है वह हमारे सामने है, जिस उत्साह के साथ वर्ष 2017 में हमने नये वर्ष में प्रवेश किया था वर्ष 2018 में वह उत्साह तो नहीं है परन्तु कुछ नयी आशायें ज़रूर हैं हमारे साथियों ने पूरे वर्ष हमारे चिकित्सकों को जो सपने दिखाये हैं उन सपनों को पूरा होने का समय आ गया है यह सपने कितने पूरे होंगे ! यह तो आने वाले कुछ समय में ही निर्णित हो जायेगा।

"ऊँट किस करवट बैठता है" यह कहना अभी ठीक नहीं है लेकिन जो प्रतीक्षा थी कि 30 दिसम्बर के बाद सबकुछ ठीक हो जायेगा वह 30 दिसम्बर का समय पार हो चुका है और अब हम सबको प्रतीक्षा है कि जो सपने दिखाये गये हैं वह सपने साकार होंगे या फिर एक सपने के बाद एक नया सपना और दिखाया जायेगा 28 फरवरी, 2017 को जैसे ही भारत सरकार स्वास्थ्य मन्त्रालय के वेबसाइट पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सन्दर्भित एक आदेश प्रसारित हुआ इस आदेश के आते ही सारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी संगठन उत्साहित हो गये कुछ ने इस आदेश को ठीक से पढ़ा और कुछ ने अपने हिसाब से उसे समझा, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मैकेनिज़्म के लिए जारी इस सूचना को लोगों ने मान्यता का आदेश बना दिया। मार्च के पहले हफ्ते में तो कुछ इस तरह प्रचारित किया गया कि मानो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिल ही गयी हो ।

ऐसे संगठन जो वर्ष 2011 के बाद अस्तित्व में आये और इन 6 वर्षों में जिन्होंने पूरे देश में चीख़ चीख़ कर यह कहा कि अभी तक जो आन्दोलन चलाये गये थे वह आन्दोलन स्वार्थ के वशीभूति होकर चलाये जा रहे थे। अब हम ही इस आन्दोलन को ठीक से चलायेंगे और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाकर रहेंगे। जो हमारे पुराने आन्दोलनकारी साथी थे और जिनके प्रयासों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्थापित हो सकी थी ऐसे पुरोधाओं को खूब भला बुरा कहा गया और चिकित्सकों के मन में यह भर दिया गया कि वही और उनका संगठन इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कल्याण कर सकता है। पुरानी कहावत है थोथा चना बाजे घना की तर्ज़ पर इन तथाकथित नेताओं ने खूब बदज़ुबानी की। मज़ा तो तब आता था जब हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेतृत्वकर्ता इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर ही सवालिया निशान खड़ा करते थे, धीरे धीरे इन लोगों ने अपना प्रभाव लोगों पर जमाया पुरानी लोकोक्ति है कि निंदा रस से बड़ा कोई रस नहीं होता आप किसी की निंदा करें तो उसे सुनने में बड़ा आनन्द आता है और इसी आनन्द को लेने के लिए लोग बाग समूह में एकत्रित हो जाते हैं, 11 से लेकर 17 तक तरह तरह की बाज़ीगरी की गयी कई बार मान्यता की अन्तिम तिथि भी घोषित की गयी, लोगों ने दावा किया कि अगर इस तिथि तक मान्यता नहीं दिला पाये तो यह कर देंगे वह कर देंगे। मन्त्रियों के कार्यालयों में जाकर फोटो खिचाना फिर उसे सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित करना एक शगल सा हो गया।

जब हमारे नेता लोक सभा में जाकर फोटो खिचवाते हैं और उसे फेसबुक व वाह्टस्एप पर डालते हैं और यह दिखाते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए सही प्रयास वही कर रहे हैं, हमारा सीधा सादा इलेक्ट्रो होम्योपैथ यह नहीं समझ पाता कि यह चकाचौंध क्यों दिखायी जा रही है ?वह यह भी नहीं जानता कि मान्यता लोकसभा या राज्यसभा से नहीं मिलती है मान्यता के लिए कुछ नियम होते हैं जिनका पालन करने के उपरान्त ही सरकार मान्यता जैसे गम्भीर विषय पर विचार करती है, नेताओं के पास जाना, उन्हें ज्ञापन देना यह सारी बातें सरकार पर दबाव तो बनाती हैं परन्तु नेताओं से मिलने से यदि मान्यता मिलती होती तो हमारा पुराना इतिहास काफी अच्छा है इन्हीं सब कारगुजारियों के बीच जैसे ही 28 फरवरी का आदेश आया ऐसा लगा कि हमारे नेताओं को बिल्ली के भाग्य से छींका टूट गया।

जिसने जैसा चाहा वैसा उस पर टूट पड़ा हर संगठन यह दावा करने लगा कि भारत सरकार ने 28 फरवरी, 2017 को जो आदेश पारित किया है वह उन्हीं के प्रयास से हुआ है खैर जो कुछ भी हुआ ठीक हुआ और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में था, प्रथम आवृत्ति में उस आदेश के अनुपालन में जो अफ़रा तफ़री दिखायी गयी उसके परिणाम शीघ्र ही सामने आ गये, एक नहीं दो नहीं, पूरे के पूरे प्रथम आवृत्ति में भेजे गये प्रपोज़ल अस्वीकार कर दिये गये, कुछ लोगों को मुद्दा मिला और कुछ के मन में टीस रही, अभी यह टीस चल ही रही थी कि लोकसभा में माननीया स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सन्दर्भित जो उत्तर दिये उसने इन नेताओं के पैरो से जमीन खींच ली बयान की वास्तविकता को समझे बगैर उलटी सीधी हरकतें करनी शुरू कर दी कल तक जो सरकार की बड़ाई कर रहे थे वही नेता आज उसी सरकार की बुराई करते नहीं थक रहे थे। घेराव और थू–थू जैसे प्रोग्रामों का आवाहन किया गया एक तरह से ऐसा वातावरण इन नेताओं ने बनाया कि जैसे मानो कोई बहुत बड़ा वज्रपात हो गया हो, यह तो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया और बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने इस स्थिति को गम्भीरता से समझा और जैसा कि प्रायः होता है कि जब जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति बिगड़ती है यही दोनों संगठन आगे आकर स्थिति को संभालते हैं इस बार भी यही हुआ बोर्ड ने पूरे प्रदेश में धुआं–धार प्रेस कान्फ्रेंसेस करके चिकित्सकों के मध्य फैल रही निराशता को दूर किया और एक नये भविष्य के संकेत दिये। बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 की इस गतिविधि का सबने गहराई से मूल्यांकन किया और वह भी उसी राह में चल पड़े जिस राह में हम चल रहे थे, तमाम सारी परिस्थितियों से निपटते हुए दिसम्बर का वह अन्तिम दिन भी आ गया है जो भारत सरकार द्वारा प्रपोज़ल प्रस्तुत करने का अन्तिम निश्चित दिन था।

अन्तिम दिन तक लोगों में उहापोह बनी रही बहुत गीटिंगे हुई अलग अलग दावे हुए और अन्ततः समय के साथ अपने आप को समेटना पड़ा, हम अपेक्षा करते हैं कि आने वाले कुछ दिनों में सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ न कुछ सकारात्मक निर्णय लेगी।

मिश्रित फल वाला रहा वर्ष 2017

जीवन में समय का बहुत मूल्य है, जीवन छोटा होता है और समय अपनी गति से गुज़रता रहता है, कभी–कभी तो ऐसा हो जाता है कि पूरा का पूरा समय गुजर जाता है और व्यक्ति यह सोचता ही रह जाता है कि उसे क्या करना है ! इसीलिए सामान्यतयः व्यक्ति अपने जीवन की एक समय सारणी बना लेता है और उसमें यह निश्चित कर लेता है कि कितनी अवधि में कौन सा कार्य पूरा करना है, यह आवश्यक नहीं है कि निर्धारित समय सीमा के अन्दर कार्य पूरा हो ही जाये, परन्तु जो कार्य अपने वश में होता है उसे तो समय सीमा के अन्दर पूर्ण करने का पूरा प्रयास किया जाता है और जो कार्य दूसरे के वश में है उस कार्य को पूरा करने के लिए यह प्रयास किया जाता है कि यदि समय रहते हुए यह कार्य पूरा हो जाये तो अच्छा है अन्यथः कार्य पूरा होने की अवधि बढ़ा दी जाती है और पूरे मनोयोग से यह प्रयास किया जाता है किसी भी तरह यह कार्य पूरा हो जाये कार्य दो तरह के होते हैं एक वह कार्य जो व्यक्तिगत होते हैं दूसरे वह कार्य जिसका हित सामूहिक होता है व्यक्तिगत कार्य तो निजी स्तर पर किसी भी तरह से सम्पादित किये जा सकते हैं परन्तु जो कार्य सामूहिक हितों से जुड़े होते हैं उनके पूर्ण होने में अलग व्यवस्थायें होती हैं।

सामूहिक कार्य में यदि मानसिकता एक हो तो कार्य पूर्ण होने में विलम्ब नहीं लगता है परन्तु जब एक ही कार्य के लिए विभिन्न मनास्थिति वाले लोग हों तो ऐसे कार्य को पूर्ण होने में कई बाधाओं से होकर गुज़रना पड़ता है कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जो सामूहिक हितों को साधते हैं परन्तु जो लोग इससे जुड़े होते हैं वह इससे व्यक्तिगत सम्पति जैसा मान कर व्यवहार करते हैं।

आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति कुछ ऐसी ही नज़र आ रही है इससे जुड़े तमाम सारे लोग और तमाम सारे संगठन अपने अपने हिसाब से कार्य कर रहे हैं। कार्य तो हर जगह होता है और होता भी रहेगा लेकिन कार्य करने का लेखा जोखा होना चाहिये हर व्यक्ति,संस्था और समूह जब कोई कार्य करता है तब वह निर्धारित कर लेता है कि हमें यह कार्य कितने दिनों में पूर्ण करना है, वर्ष पर्यन्त तक कार्य करते हुए हर व्यक्ति यह सोचता है कि पूरे वर्ष हमने जिस क्षेत्र में कार्य किया उसका क्या परिणाम रहा ?

वर्ष 2017 में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत कार्य हुआ जनवरी से लेकर दिसम्बर तक कार्य ही कार्य होता रहा परन्तु कल भी परिणाम प्रतीक्षित था और भी प्रतीक्षित है। यह एक सुखद संयोग है कि जिन लोगों ने वर्ष पर्यन्त मेहनत की वह आज भी परिणामों के लिए आशंकित हैं और परिणाम घोषित होने के पहले ही आशंका और फिर परिणामों के लिए नई रणनीति का चयन करना और नई व्यूह–रचना करना यह कहीं न कहीं यह सिद्ध करता है कि जिन लोगों ने वर्षपर्यन्त कार्य किया है या तो उन्हें अपने कार्य पर भरोसा नहीं है या फिर परिणामदायी संस्था पर विश्वास नहीं है। जो भी हो ! सब सामने आता है अब हम एक दृष्टि वर्ष 2017 में किये गये कार्यों पर डालते हैं तो यही पाते हैं कि वर्ष 2017 में जो कुछ भी हुआ वह मिश्रित फलदायी रहा है–

वर्ष 2017 का प्रारम्भ 4 जनवरी, 2017 को अधिकारिता दिवस के साथ प्रारम्भ हुआ बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अधिकारिता दिवस कार्यक्रम धूम–धाम से मनाया गया सारे प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथ इस कार्यक्रम में जुड़े और इस संकल्प के साथ कि वर्ष 2017 में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिए पूरे प्रयास किये जावेंगे फिर 11 जनवरी, 2017 का दिन पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जन्मदाता डा0 काउण्ट सीज़र मैटी का 208 वां जन्मदिवस धूम–धाम से मनाया गया विभिन्न संगठनों के नेताओं के द्वारा बड़े–बड़े वादे किये गये और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाने का दावा किया गया, कुछ संगठनों ने 6 माह के अन्दर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाने की बात कह कर वाह–वाही लूटी फरवरी के पहले सप्ताह में एक नया कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ विभिन्न संगठनों के नेताओं द्वारा स्वास्थ्य मंत्री से मिलना और मिलते हुए कार्यक्रम की तसवीरों को सोशल मीडिया के माध्यम से खूब प्रसारित किया गया और यह बताने का प्रयास किया कि वही इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की लड़ाई लड़ रहे हैं, एक समय तो ऐसा आया जब स्वास्थ्य मंत्री से मिलने की होड़ सी लग गयी फेसबुक पर हर दूसरे दिन किसी न किसी संस्था प्रमुख की तसवीर दिखायी देती थी जिसमें वह अपने आप को माननीय स्वास्थ्य मंत्री से मिलकर मान्यता की मांग करते हुए दिखायी देता था। जिनको कुछ नहीं मिलता था वे अपने प्रास्पेक्टस का अनावरण कराते हुए फेसबुक पर तसवीरें डालते हुए अपने पक्ष में माहौल बनाते दिखता था, अभी यह कार्यक्रम चल ही रहा था कि 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मैकेनिज़्म के लिए आदेश जारी कर दिया, जैसे ही यह आदेश जारी हुआ विभिन्न संगठन यह दावा करने लगे कि उन्हीं के प्रयास से भारत सरकार ने यह आदेश जारी किया है, इतना बड़ा झूठ बोलते हुए उन लोगों को जरा भी हिचक नहीं लगी, शायद पाठकों को ध्यान होगा कि गजट के माध्यम से हम अपने पाठकों को यह बता चुके हैं भारत सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा 28 फरवरी, 2017 का यह आदेश किन परिस्थितियों में जारी किया गया ! इस आदेश के आते ही जैसे की हमारे साथियों की आदत है कि पहले हम पहले हम की तर्ज़ पर बिना समय गवांये पहल कर दी।

इस मैकेनिज़्म में सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्थाओं से यह जानना चाहा था कि वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति क्या है ?इसके लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा 8 प्रश्नों की एक सूची जारी की गयी थी, सरकार की इच्छा थी कि देश में जितने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्था संचालक हैं वह संगठित होकर एक ऐसा प्रपोज़ल बनाकर सरकार के पास भेजें जिससे सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वास्तविक स्थिति से परिचित हो और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भविष्य के निर्धारण के लिए कोई नीति बना सकें परन्तु हमारे साथी सरकार की इस बात को नहीं समझ सके और कहीं पीछे न रह जायें इसलिए प्रथम आवृत्ति में बिना सोचे समझे सरकार के पास प्रपोज़ल प्रेषित कर दिये। इतनी जल्दबाजी क्यों दिखायी गयी ?यह तो प्रपोज़ल भेजने वाले ही जानें जबकि सरकार ने प्रपोज़ल भेजने के 4 चरण निर्धारित किये थे पहला चरण 31 मार्च तक, दूसरा चरण 30 जून तक, तीसरा चरण 30 सितम्बर तक, चौथा और अन्तिम चरण 31 दिसम्बर 2017 को पूरा होना था। होना तो यह चाहिये था कि मैकेनिज़्म के पत्र को गम्भीरता से पढ़ा जाता एक–एक बिन्दु पर विस्तार से चर्चा की जाती और हर बिन्दु की पेचीदिगियां समझी जाती और अच्छा होता यदि सारे संस्था संचालक एक मत, एक राय होकर एक ऐसा प्रपोज़ल सरकार को बनाकर देते जिससे कि सरकार भी संतुष्ट होती और कोई निश्चित व्यवस्था तय करती परन्तु नियति को तो कुछ और ही स्वीकार था इसीलिए किसी ने किसी की नहीं सुनी और स्वतन्त्र भाव से प्रपोज़ल भेजने प्रारम्भ कर दिये। पहले चरण में भेजे गये 7 के 7 प्रपोज़ल सरकार द्वारा अस्वीकृत कर दिये जाने से लोगों के मन में निराशा कम प्रसन्नता ज़्यादा हुई जिनके प्रपोज़ल वापस हुए उनका हास्य भी किया गया और नई तैयारी प्रारम्भ कर दी गयी।

इन अस्वीकृत प्रपोज़लों की जानकारी आमजन को भारत सरकार द्वारा जारी 13 जून के पत्र के माध्यम से शायद प्रपोज़ल भेजने के तरीके से सरकार में बैठे अधिकारी यह मान बैठे थे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की संस्था संचालकों को 28 फरवरी, 2017 के पत्र का भाव ज़्यादा स्पष्ट नहीं हुआ इसलिए 13 जून के पत्र में भारत सरकार ने प्रपोज़लों को भेजने की स्थिति को अति स्पष्ट कर दिया। अभी इन सभी बिन्दुओं पर चर्चा हो रही थी कि संसद में 28 जुलाई, 2017 को भारत की स्वास्थ्य राज्यमंत्री माननीया श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में जो जानकारी दी और समाचार पत्रों में इस जानकारी को जिस ढंग से प्रकाशित किया गया उसने पूरे देश में भूचाल सा ला दिया लोगों को यह शंका पैदा हो गयी कि 10 जनवरी, 2004 जैसी स्थिति की पुर्नावृत्ति तो नहीं हो रही है।

आज का सूचना तन्त्र बड़ा मज़बूत है कुछ ही घन्टों में पूरे देश में यह ख़बर फैल गयी लोग परस्पर चर्चा करने लगे और अपने भविष्य के लिए आशांकित होने लगे, कुछ ही पलों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के वह नेता जो अभी तक भारत सरकार की बड़ाई कर रहे थे तत्काल पलट गये संसद में दिये गये माननीया मंत्री द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर को गम्भीरता को समझे बिना ही तरह–तरह के करतब करने लगे, कोई घरने की बात करने लगा, कोई विरोध की बात करने लगा, कोई थू –थू प्रदर्शन की चर्चा करने लगा अर्थात जितने मुहँ उतनी बातें। इसका परिणाम यह हुआ कि सारी खुशी एक पल में निराशा में बदल गयी, तब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया और बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 सामने आये और इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मध्य जा जाकर पत्र की वास्तविकता से अवगत कराया, प्रदेश व्यापी पत्रकार वार्ताओं का आयोजन किया गया इन पत्रकार वार्ताओं के माध्यम से लोगों को यह अवगत कराया गया कि माननीया मंत्री जी ने अपने उत्तर में जो कुछ भी कहा है वह कहीं से भी प्रतिकूल नहीं है अपितु उनके उत्तर से बात की स्पष्टता हो रही है कि भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए नीति निर्धारित करना ही चाहती है, माननीया मंत्री जी ने यह जानकारी भी दी है कि एक इन्टर डिपार्टमेन्टल कमेटी का गठन भी किया गया है, बोर्ड की इस पहल का यह प्रभाव पड़ा कि कल तक जो सदमे में थे वह फिर से बाहर आ गये और यह चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भविष्य उज्जवल है पूरे देश में जितने भी संगठन कार्य कर रहे थे वह सब जगह–जगह सम्मेलन और कार्यक्रम करने लगे और चिकित्सकों की जागरूकता के नाम पर नित नये अभियान भी चलाये जाने लगे इस बीच जून के महीने में कुछ और लोगों ने प्रपोज़ल प्रस्तुत किये और कुछ लोग प्रपोज़ल देने की तैयारी करने लगे जून और सितम्बर के बीच में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि अधिकांश संगठन के लोग यह जानने की इच्छा रखने लगे कि प्रपोज़ल के लिए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 का स्टैण्ड क्या है ! लोगों को इस बात की जिज्ञासा भी रही कि आखिर 7 माह का समय बीत जाने के उपरान्त भी बोर्ड वाले अपना पत्ता क्यों नहीं खोल रहे हैं ?लोग टेलीफोन के माध्यम से घुमा–फिरा कर यह जानने का प्रयास करने लगे कि आखिर देश के सबसे ज़्यादा मज़बूत संगठन का प्रपोज़ल की दिशा में क्या सोच है ?कई संस्था प्रमुखों ने इस विषय पर बोर्ड के प्रमुख डा0 एम0 एच0 इदरीसी से चर्चा भी की कोई संतुष्ट हुआ और कोई कल भी कयास लगा रहा था और आज भी कयास लगा रहा था। इस बीच 13 नवम्बर, 2017 को भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया को पत्र लिखकर यह सूचित किया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान के विषय का निर्णय निश्चित रूप से होगा। इसकी सूचना आई0 सी0 एम0 आर0 ने डिपार्टमेन्ट ऑफ हेल्थ रिसर्च को भी प्रेषित किया है यह इस बात की पुष्टि है कि वर्ष 2018 में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई सुखद सन्देश निश्चित रूप से लायेगा।

दिसम्बर का महीना सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण रहा है ऐसे संगठन जो वर्ष पर्यन्त प्रपोज़ल देने की प्रतीक्षा करते रहे वह अन्तिम दिनों में प्रपोज़ल देने का मन बना रहे हैं ऐसे लोग भी सामने आये जो पहले प्रपोज़ल दे चुके थे उन्होंने दोबारा तिबारा और चौबारा प्रपोज़ल भेजे हैं। हो सकता है कि अन्तिम तिथि को भी कुछ और प्रपोज़ल भेजें गये हों कुछ ऐसे संस्था प्रमुख जो अभी तक कोई निर्णय नहीं ले पा रहे हैं हो सकता है हड़बड़ाहट में कोई निर्णय ले लें। 25 और 26 दिसम्बर को देश के विभिन्न भागों में लोगों ने मीटिंगें कीं और कुछ निर्णय भी लिये। जो कुछ भी किया होगा सब सामने आयेगा।

कुल मिलाकर वर्ष 2017 मिश्रित प्रक्रिया वाला रहा इस वर्ष शब्दबाण खूब छोड़े गये एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश की गयी प्रतिस्पर्धा का स्थान प्रतिद्वन्द्विता ने ले लिया एक दूसरे के प्रति सम्मान भाव दूर–दूर तक दिखायी नहीं पड़ा स्वयं को सर्वश्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया गया। धीरे–धीरे 2017 समाप्त हो गया। वर्ष 2018 में नई आशाओं के साथ आप सबका स्वागत है।

JANUARY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

FEBRUARY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28			

MARCH

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

APRIL

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

MAY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

Dr. Count Ceasure Mattei 11th January,1809

JUNE

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

JULY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

AUGUST

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

SEPTEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

OCTOBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

NOVEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

DECEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

Un forgettable dates

04 January → *Adhikar Diwas*

11 January → *Mattei Diwas*

24 April → *Board's Foundation Day*

21 June → *Vijay Diwas*

25 July → *EHMAI Foundation Day*

04 September → *Mattei Nirwan Diwas*

30 November → *Prerna Diwas*

(Dr. N.L. Sinha Jayanti)